Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

उपनिषदों की समसामयिक उपादेयता

डॉ. सुजीत कुमार
असि. प्रोफसर, संस्कृत –विभाग, कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 5, Issue 2
Page Number : 159-164

Publication Issue :
March-April-2022

Article History
Accepted : 02 March 2022
Published : 20 March 2022

शोध सारांश- संस्कृत साहित्य की परम्परा में उपनिषदों का अपना एक पृथक् महत्त्व है। उपनिषदों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और समकालीन विषय है । उपनिषद् भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता के मूल स्रोतों में से एक हैं, जो मानव जीवन के गहरे प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं। वे अद्वैत,आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष और कर्म जैसे गूढ़ सिद्धान्तों पर आधारित है। यह ज्ञान आज भी मानव जीवन के उद्देश्य और प्रकृति को समझने में मदद करता है। लोग आज भी आत्मा की खोज और अपने अस्तित्त्व का मर्म समझने के लिये उपनिषदों का अध्ययन करते हैं। आधुनिक युग में लोग व्यक्तिगत विकास और मानसिक शान्ति के लिये उपनिषदों में बताये गये ध्यान और योग मार्ग को अपनाते हैं। उपनिषदों के सिद्धान्त जैसे सत्य, अहिंसा और करुणा आज भी नैतिकता और मानवता के मूलभूत स्तम्भ माने जाते हैं। ये सिद्धान्त न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाज और राष्ट्र के बीच आपसी सद्भाव और शान्ति स्थापित करने में सहायक है। उपनिषदों में प्रकृति और ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने के लिए गहन विचार किया गया है। यह दृष्टिकोण आज के वैज्ञानिक अनुसन्धान से सम्बन्धित है। उपनिषद् का संदेश किसी एक धर्म, संस्कृति या जाति तक सीमित नहीं है। इनका संदेश सार्वभौमिक है और हर समय समाज के लिए प्रासंगिक है। आधुनिक युग में जहां वैश्वीकरण और सांस्कृतिक विविधता है वहां भी उपनिषद् के सिद्धान्त प्रासंगिक है। उपनिषदों में मनुष्य की गरिमा और समानता का विचार प्रस्तुत किया गया है। आज के समाज में जाति, वर्ग, और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को दूर करने में उपनिषदों के सिद्धान्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इनकी शिक्षाएं समयातीत हैं और आज के जटिल जीवन में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

मुख्य शब्द - सगुण–निर्गुण, नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक, वसुधैव कुटुम्बकम्, वैश्वीकरण, विश्वबन्धुत्व, दम्यत्, दत्त, दयध्वम्, श्रेयश्च, ब्रह्माण्ड, सांस्कृतिक, प्रेयश्च, करुणा, मानवता, अहिंसा, औपाधिक, समयातीत, राष्ट्रियता, अखण्डता, सौहार्द, सांसारिक, मोक्ष, सत्य, धर्म, प्रकृति, वैज्ञानिक, विविधता, अनुसन्धान, प्रासंगिकता , परमतत्त्व, अद्वैततत्त्व, राजनीतिक, सर्जक, पालक, संहारक, अक्षर, अजर, अमर, एकेश्वरवाद, प्रतीकात्मक, विवेक – अविवेक, ग्राह्य, त्याज्य, सहिष्णुता ।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

किसी भी ग्रन्थ की प्रासंगिकता का निर्धारण उसमें प्रतिपादित मूल्यों के मूल्यांकन के आधार पर कर सकते हैं। वह मूल्य नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक,राजनीतिक, दार्शनिक आदि में से किसी भी प्रकार का हो सकता है। उपनिषदों में भौतिक जगत् के पीछे छिपे हुए परमतत्त्व के अन्वेषण सम्बन्धी विचारों का प्रतिपादन हुआ है। वह आत्मतत्त्व अद्वैततत्त्व ब्रह्म है। उपनिषद् जिस एकेश्वरवाद को स्वीकार करता है वह ब्रह्म है, उस ब्रह्म के सगुण और निर्गुण दो भेद हैं। सगुण ब्रह्म पुलिंग के विशेषणों से युक्त है और यही संसार का सर्जक, पालक,संहारक है। निर्गुण ब्रह्म अक्षर, अजर, अमर, नपुंसकलिंग के विशेषणों से युक्त है। ब्रह्म और आत्मा की एकता के प्रसंग में ब्रह्म के जीवात्मा तथा परमात्मा रूपी दो औपाधिक भेद किये गये हैं। उपनिषदों में जिस ब्रह्म का प्रतिपादन हुआ है, उसके विभिन्न औपाधिक प्रतीकात्मक स्वरूप की उपासना आज समाज में हो रही है । समाज शारीरिक और मानसिक दु:खों की निवृत्ति के लिए इन्द्र, वरुण, गणेश, कृष्ण,राम,शिव आदि विविध नाम वाले देवी–देवताओं की उपासना करता है और अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा लेता है। एक ही ब्रह्म के औपाधिक रूप वाले ये देवता आज भी उपासकों की मानसिक सन्तुष्टि के साधन हैं।

मिथ्यावादी भौतिक जगत् में आज भी हर्ष और शोक होता है। दोनों परिस्थितियों में समभाव रहने की बात उपनिषद् करता है, किंतु मनुष्य इसमें समभाव न रहकर दु:खित होता है। यही दु:ख आज भी हमारे विनाश का कारण है, क्योंकि दुख से शोक , शोक से अविवेक और विनाश होता है। उपनिषद् इस मिथ्यात्व जगत् में जिन भौतिक ऐश्वर्यों की प्राप्ति कराता है, उसे श्रेय और प्रेय के रूप में कठोपनिषद् में स्पष्ट किया गया है –

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत् - स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीर:।।

श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते, प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते।।

अर्थात् – इस मन्त्र में मानव जीवन से सम्बन्धित दो मार्ग बताये गये हैं– मोक्ष मार्ग तथा सांसारिक भोग मार्ग। यह दोनों मार्ग मनुष्य के पास आते हैं, किंतु जो ज्ञानी है वह मोक्ष मार्ग का ग्रहण करता है और जो अज्ञानी है वह प्रेय रूपी सांसारिक मार्ग का ग्रहण करता है। मोक्ष मार्ग अत्यन्त कठिन मार्ग है तथा सांसारिक मार्ग प्रिय एवं सुखकर होता है। श्रेय मार्ग का अनुसरण करने वाला अपना कल्याण करता है और सांसारिक मार्ग का अनुसरण करने वाला भोगों में लिप्त होकर अपने लक्ष्य से विमुख हो जाता है। सांसारिक प्राणी इन्हीं प्रेय की प्राप्ति के लिए जीवन पर्यन्त प्रयत्न करता है और अज्ञान के कारण ग्राह्य एवं त्याज्य में भेद नहीं कर पाता। अत: प्रवृत्ति और निवृत्ति के लिए उपनिषद् की प्रासंगिकता है।

इन्द्रिय दमन एवं दु:खनिवृत्ति- आज समाज में जो आत्महत्या हो रही है, उसका कारण दु:ख है और उपनिषद् इसी दु:खनिवृत्ति की बात करता है। दु:ख से मनुष्य दु:खित होकर आत्महत्या करता है,साथ ही दूसरों को शोकग्रस्त बनाकर उसके विनाश का मार्ग प्रशस्त करता है। अत: आत्महत्या तथा शोकग्रस्त जैसे लोगों के लिए आज भी उपनिषद् की आवश्यकता है। सृष्टि प्रक्रिया के अन्तर्गत सत्य सृष्टि का आदि कारण जल को माना गया है । आज भी वह जल समस्त प्राणियों के जीवन यापन का आधार है। इसके अतिरिक्त पृथ्वी अन्न,वायु आदि पर्यावरण के तत्त्व के रूप में आज भी समस्त प्राणियों के लिए आवश्यक है।

उपनिषद् सत्य और असत्य जिस कर्म की बात करता है उसी को पाप और पुण्य की दृष्टि से आज भी समाज में देवी– देवताओं की आराधना हो रही है। गंगा नदी के जल को आज भी पवित्र एवं देवतुल्य स्वीकार किया गया है । ईशावास्योपनिषद् में मनुष्य को कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की जो बात कही गयी है, वही आयु आज प्रत्येक मनुष्य पूर्ण करना चाहता है, किंतु असत् कर्मों के कारण अधूरी रह जाती है। अत: सौ वर्ष तक की पूर्ण आयु जीने के लिए उपनिषद् प्रासंगिक है ।

उपनिषदों का नैतिक सिद्धान्त शाश्वत् शान्ति, दम्यत्, दत्त, दयध्वम् तथा परम कल्याण है । आज समाज में आतंकवाद, दुराचार भ्रष्टाचार के वैश्वीकरण में इन्द्रिय दमन के द्वारा स्वार्थ का परित्याग कर, दान एवं दया की भावना से प्राणी विशेष के लिये ही नहीं बल्कि समस्त जीवों के उत्कर्ष के लिये कार्य करना चाहिए।

आज समाज में स्वार्थ की अधिकता और सहयोग की अल्पोपलब्धता के कारण अशिक्षित एवं निम्नवर्गीय लोगों का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है, इसके लिये उपनिषदों में वर्णित – तपस्या, दान, आर्जव, सत्य–वचन,अहिंसा को जीवन रूपी यज्ञ की दक्षिणा के रूप में स्वीकार करके परोपकार की भावना से योगदान देना चाहिए क्योंकि इनके अभाव में जीवन की सार्थकता नष्ट हो जाती है ।

आध्यात्मिकता और आत्मज्ञान- आज के समय में भौतिकतावाद और उपभोक्तावाद की प्रवृत्तियाँ अधिक हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानसिक और भावनात्मक असंतोष बढ़ता जा रहा है। उपनिषदों के सिद्धांत आत्मज्ञान और आत्मा की पहचान को प्रमुखता देते हैं। उपनिषदों में 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) और 'तत्त्वमसि' (तू वह है) जैसे महावाक्य मानव को उसके वास्तविक अस्तित्त्व का बोध कराते हैं, जिससे आन्तरिक शान्ति और स्थिरता प्राप्त होती है।

योग और ध्यान- उपनिषद् ध्यान और योग के महत्त्व पर भी बल देते हैं। योगासन और ध्यान आजकल विश्वभर में मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारने के लिए अपनाये जा रहे हैं। "मुण्डकोपनिषद्" और "कठोपनिषद्" जैसे ग्रन्थों में ध्यान को आत्मा की गहरायी में प्रवेश का साधन बताया गया है। वर्तमान जीवन में मानसिक तनाव और चिन्ता से मुक्ति पाने के लिए ध्यान की प्रासंगिकता अत्यधिक है।

वैश्विक एकता का सिद्धान्त- उपनिषदों में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (सारा विश्व एक परिवार है) और 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' (सभी कुछ ब्रह्म है) का विचार दिया गया है। ये विचार वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण के साथ –साथ वैश्विक एवं सामाजिक एकता के संदर्भ में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। पृथ्वी पर सभी जीवों को एक समान देखना और उनका सम्मान करना । उपनिषदों का अद्वैतवाद (अद्वैत वेदान्त) यह सिखाता है कि ब्रह्म और आत्मा एक ही है, इस संसार में जो भी कुछ है, वह उसी एक परम सत्य का रूप है। वर्तमान में जब हम वैश्विक विभाजन, युद्ध, नस्लभेद, और साम्प्रदायिक हिंसा के साक्षी बनते हैं तब अद्वैतवाद का सिद्धान्त यह समझने में मदद करता है कि सभी मानव एक ही ब्रह्म के अंश हैं। यह दृष्टिकोण हमें धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता के बीच सहिष्णुता और वैश्विक समरसता की प्रेरणा देता है। यह सिद्धान्त राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक विभाजन को समाप्त करने में एक सशक्त माध्यम हो सकता है।

कर्म और नैतिकता का सिद्धान्त- उपनिषदों में कर्म का सिद्धान्त अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। "कर्मण्येवाधिकारस्ते" का विचार कहता है कि मनुष्य को कर्म करना चाहिए और उसके फल पर विचार नहीं करना चाहिए। वर्तमान समय में लोग परिणामों के पीछे भागते हुए नैतिक मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं, उपनिषदों का यह सिद्धान्त आत्म–नियन्त्रण, धैर्य और नैतिकता का पालन करने की प्रेरणा देता है। यदि यह सिद्धान्त सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में अपनाया जाय तो यह समाज में ईमानदारी और पारदर्शिता की भावना को प्रबल कर सकता है।

मूल्यों और नैतिक शिक्षा का पुनरुद्धार- आज की शिक्षा प्रणाली में प्राय: नैतिकता का अभाव देखा जाता है। उपनिषद् हमें आत्मा के सत्य, ब्रह्म, और जीवन के गहरे रहस्यों की ओर उन्मुख करता हैं, जिससे केवल बौद्धिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य भी प्राप्त होता है। उपनिषदों की शिक्षा युवाओं में चरित्र निर्माण, नैतिकता और आत्म–जागरूकता की भावना को बढ़ावा देने में सहायक हो सकता है । वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अगर उपनिषदों के सिद्धांतों को सम्मिलित किया जाय तो यह विद्यार्थियों में सहनशीलता, करुणा, और नैतिकता का विकास कर सकता है।

ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य - आधुनिक जीवन में तनाव, चिन्ता, और अवसाद जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। उपनिषद् ध्यान और योग के माध्यम से मानसिक स्थिरता और शान्ति पाने का मार्ग दिखाता है। उपनिषदों में बताया गया है ध्यान हमारे आन्तरिक अस्तित्त्व से जोड़ता है और मानसिक तनाव को कम करता है। वर्तमान समय में ध्यान का अभ्यास विश्वभर में लोकप्रिय हो रहा है क्योंकि यह मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी है। उपनिषदों में बताया गया यह ध्यान मार्ग हमें वर्तमान जीवन की चुनौतियों से जूझने में मदद करता है।

पर्यावरणीय स्थिरता और संरक्षण- उपनिषदों में प्रकृति और मनुष्य के बीच गहरे सम्बन्ध को महत्त्व दिया गया है । **"ईशावास्योपनिषद्"** में कहा गया है कि इस ब्रह्मांड में जो कुछ भी है, वह ईश्वर से आच्छादित है। यह विचार पर्यावरणीय दृष्टिकोण से अत्यन्त प्रासंगिक है। वर्तमान समय में जब जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय विनाश जैसे मुद्दे हमारे सामने हैं, उपनिषदों का यह सिद्धान्त सिखाता है कि हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए और इसके साथ सन्तुलन बनाये रखना चाहिये । प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग संयम और सहानुभूति के साथ करना, उपनिषदों का यह संदेश पर्यावरणीय संरक्षण के लिए आज भी अत्यन्त प्रासंगिक है।

मानव जीवन की मूलभूत समस्याओं का समाधान- उपनिषदों में मृत्यु के बाद जीवन, आत्मा की अमरता, और पुनर्जन्म जैसे विषयों पर चर्चा होती है, जो मनुष्य के जीवन और मृत्यु के सन्बन्ध में प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है। ये सिद्धान्त वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है, जब लोग जीवन के उद्देश्य और मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में चिन्तन कर रहा है।

मुक्ति और मोक्ष की अवधारणा- उपनिषदों में मोक्ष को जीवन का अन्तिम लक्ष्य माना गया है। यह केवल मृत्यु के बाद आत्मा की मुक्ति का विचार नहीं है, बल्कि इसे जीवन के दौरान भी प्राप्त किया जा सकता है। मोक्ष का अर्थ है सभी बन्धनों से मुक्त होना–मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक। आधुनिक जीवन में जहाँ लोग अपने भौतिक सुख–सुविधाओं में उलझे

रहते हैं, उपनिषदों का मोक्ष का सिद्धांत बताता है कि सच्ची खुशी और संतोष बाहरी साधनों में नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और मानसिक स्वतंत्रता में निहित है।

सामाजिक समरसता और मानवता का सिद्धांत - उपनिषदों में सभी जीवों के प्रति समान दृष्टि रखने की शिक्षा दी गयी है। यह विचार आज की दुनिया में जाति, धर्म, लिंग, और वर्ग के विभाजन को समाप्त करने का मार्गदर्शन कराता है। जब समाज में भेदभाव और असमानता की भावना बढ़ रही है, उपनिषदों का यह संदेश कि सभी आत्माएँ समान हैं, एक बेहतर और अधिक न्यायसंगत समाज का निर्माण हो सकता है। यह सामाजिक समरसता, समानता और मानवाधिकारों की अवधारणा को और भी मजबूत करता है।

अर्थव्यवस्था और सन्तुलित जीवन शैली- आधुनिक युग में आर्थिक प्रगति के साथ ही उपभोक्तावाद और भौतिकवाद का प्रचलन बढ़ गया है, जिससे सामाजिक असमानताएँ और मानसिक तनाव भी बढ़े हैं। उपनिषदों में सन्तुलित जीवन शैली और भोग की सीमा का पालन करने की बात कही गयी है। यह सिद्धांत आज के आर्थिक युग को संयमित और संतुलित उपभोग की प्रेरणा देता है, जो न केवल व्यक्ति के जीवन में संतुलन लाता है, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है।

सांस्कृतिक सुव्यवस्था - उपनिषद् भारतीय संस्कृति का आधार है, इसलिए प्रासंगिक है। वर्तमान मानव समाज की प्रबल पशु प्रवृत्ति है– आप –आप ही चरें। भोजन करना एक संस्कृति है और उसे बांटकर खाना भारतीय संस्कृति है। हमें आपको भली–भांति ज्ञात है उपनिषद् के सिद्धांतों के बारे में लेकिन जिनको नहीं पता है या जो उपनिषद् से अनभिज्ञ हैं, उनके लिए उपनिषद् को प्रासंगिक बनाना हमारा आपका काम है। कोई भी वैज्ञानिक यह कभी नहीं स्वीकार करेगा कि उपनिषद् अध्ययन से मानसिक शान्ति मिलती है। कोई भी ग्रन्थ आज कितना प्रासंगिक है वह हमारे आपके ऊपर निर्भर है क्योंकि जीवन में जब तक उस ग्रन्थ में प्रतिपादित सिद्धान्तों को व्यावहारिक जीवन में प्रयुक्त नहीं करते हैं तब तक उसकी प्रासंगिकता का कोई महत्त्व नहीं है । अपने जीवन के साथ–साथ दूसरों को भी इसी आधार पर जीवन जीने के लिए जब प्रेरित करते हैं तब इसकी प्रासंगिकता सार्थक सिद्ध होती है । यह सामाजिक, धार्मिक राष्ट्रिय तत्त्वों के प्रति एकीभाव, समाज में उच्च और निम्न वर्ग के विभाजन से व्याप्त अव्यवस्था को दूर करने तथा धर्म के नाम हो रहे अत्याचार को रोकने की शिक्षा देता है। उपनिषद् में राष्ट्रभक्ति की शिक्षा का सर्वोपरि है क्योंकि एक राष्ट्र या व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिये अनुकरणीय है, जिससे जातिवाद, धर्मवाद रूपी आन्दोलन का समूल नाश सम्भव है ।

राजनीतिक एवं प्रशासनिक परिवेश-वर्तमान राजनीतिक और प्रशासनिक सेवाएं संदिग्ध और जटिल है क्योंकि उनका उद्देश्य बदले की भावना से कार्य नियन्त्रण करना है। इसके लिये उपनिषद् की प्रासंगिकता अनुकरणीय है क्योंकि उपनिषद् में बदले की भावना से कार्य करने की बात नहीं करता यह समानता और समभाव पर विश्वास रखते हुए सौहार्द की बात करता है। आज का समाज निश्चित रूप से स्वार्थी हो गया है। अपने वर्चस्व की लड़ायी में एक दूसरे का अहित करना सामान्य बात है, परिवार से लेकर राष्ट्र तक स्वार्थ का समावेश सर्वत्र दृष्टिगत होता है। अत: यहां उपनिषदों की राष्ट्रीयता एवं अखण्डता प्रासंगिक होने लगती है।

शैक्षणिक जीवन शैली - सम्प्रति शैक्षिक वातावरण में गुरु शिष्य परम्परा उपनिषदकाल की तरह नहीं है, जहां शिष्य गुरुओं का सम्मान नहीं करते वहां आचार्य देवो भव, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव जैसे मानव मूल्य की उपादेयता प्रासंगिक होने लगती है।

भारतीय संस्कृति का परिपालन - सम्पूर्ण उपनिषद् विश्वबन्धुत्व एवं लोक कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। वर्तमान युग परिवर्तन, प्रतिस्पर्धा, सामंजस्य एवं वैश्वीकरण के दौर से गुजर रहा है ,भौतिकता के चक्कर में नैतिक आचार- विचार निरन्तर हीन हो रहे हैं ऐसी स्थिति में सत्यं वद् धर्मं चर जैसे औपनिषदिक विचारों की प्रासंगिकता और भी सार्थक सिद्ध हो सकती है।

उपनिषदों की प्रासंगिकता केवल उनके धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व तक सीमित नहीं है। वे आज के समय में समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे—मानसिक स्वास्थ्य, पर्यावरणीय संरक्षण, नैतिक शिक्षा, सामाजिक समरसता, और आर्थिक संतुलन के लिए भी एक दिशा प्रदान करते हैं। उपनिषदों के सिद्धांत न केवल हमारे आन्तरिक जीवन को उन्नत कर सकते हैं, बल्कि बाहरी जीवन में भी शान्ति, सामंजस्य और सन्तुलन ला सकते हैं। उपनिषदों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विश्लेषण करते समय हमें उनके विभिन्न आयामों पर और अधिक गहरायी से विचार करना होगा। उपनिषदों के अद्वैतवाद, कर्म के सिद्धान्त, मोक्ष, ध्यान, योग, नैतिकता और सामाजिक समरसता जैसे विषय आज भी मानव जीवन के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

सहायक ग्रन्थ सूची-

1. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-डॉ.कपिलदेव द्विवेदी-विश्व विद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-डॉ.कपिलदेव द्विवेदी-रामनारायणलाल, विजयकुमार, कटरा इलाहाबाद।
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा ऋषि-चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी।
4. वैदिक सूक्त संग्रह-डॉ. विजय शंकर पाण्डेय-अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद।
5. ईशावास्योपनिषद्-डॉ. तारणीश झा-रामनारायणलाल,बेनी माधव प्रकाशक, इलाहाबाद।
6. कठोपनिषद्- प्रो.आद्या प्रसाद मिश्र-अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद ।
7. श्रीमद्भगवद्गीता-प्रो.आद्या प्रसाद मिश्र-अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद ।
8. बृहदारण्योपनिषद्-गीता प्रेस गोरखपुर।
9. तैत्तिरीयोपनिषद्-गीता प्रेस गोरखपुर ।
10. कठोपनिषद्-डॉ.रघुवीर वेदालंकार,वेदाचार्य-चौखम्भा ओरियन्टालिया प्राच्य-विद्या, आयुर्वेद एवं दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशक दिल्ली।
11. भारतीय दर्शन आलोचन एवं अनुशीलन-चंद्रधर शर्मा-मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा.लि.दिल्ली ।
12. भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा- राममूर्ति पाठक-अभिमन्यु प्रकाशन इलाहाबाद ।
13. भारतीय दर्शन-श्री सतीशचन्द्र चट्टोपाध्याय एवं श्री धीरेन्द्र मोहन दत्त - पुस्तक भण्डार पब्लिशिंग हाउस, पटना।